प्रेस विज्ञप्ति

उपादान को निर्मल करने का प्रयास हो

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 3 फरवरी। अर्हत् वा"मय के महत्वपूर्ण आगम आयारो के सूत्र का विस्तृत वर्णन करते हुए आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा – आदमी विषय भोगों का आसेवन करता है और वह उन विषय भोगों में फंस जाता है। यह एक भंवरजाल है। आदमी के मन में मोह–माया के जाल का प्रभाव अधिक होता है।

उन्होंने कहा – आसक्ति अन्त में आगे जाकर विनाश का कारण बनती है। आत्मा की दृष्टि से व्यापक नुकसान उठाना पड़ सकता है। श्रीमद्भागवत् गीता के एक सूत्र का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा – आदमी ज्यों–ज्यों विषय भोगों का चिन्तन करता है त्यों–त्यों वह आसक्ति संग हो जाता है। संग का ही एक सम बनता है काम। कामना की पूर्ति हो जाती है तो संतुष्टि मिल जाती है। पूर्ति न हो तो क्रोध–आवेश बढ जाता है, बुद्धि का नाश हो जाता है।

पुनर्जन्म के कारण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा – क्रोध, मान, माया, लोभ – ये चार कषाय पुनर्जन्म को संचित बनाने वाले कारण है। आसक्ति के भंवरजाल में फंसने से जन्म–मरण के चक्र में फंस जाते है। कई बार ऐसी स्थिति भी बनती है कि सन्यास लेने के बाद भी आसक्ति नहीं छूटती। वेश बदल जाता है पर द्वेष नहीं बदलता।

उन्होंने कहा – उपादान और निमित्त दोनों का अलग–अलग मूल्य है। उपादान है कषाय, राग–द्वेष की भावना। निमित्त मिलता है तो उपादान को उभरने का मौका मिल जाता है। उपादान शुद्ध हो जाए तो निमित्त सही हो जाएंगे। उपादान को निर्मल बनाने का प्रयास करना चाहिए। साधना उभयमुखी होनी चाहिए। प्रमाद तो कभी भी कैसे भी हो सकता है। अप्रमाद की साधना करने से वह अप्रमत्त बन जाता है।

उन्होंने कहा – साधुओं को निमित्त से बचना चाहिए। नियमकारों ने निमित्तों से बचाने का प्रयास किया है। नव बाड़ की व्यवस्था निमित्तों से बचाने की व्यवस्था है। गुरु का काम है– शिष्य का मार्गदर्शन करना। गलती पर जागरुक करना।

इंसान को बहिर्मुखी नहीं होना चाहिए, भीतर की ओर झांकना सीखना चाहिए। वीतरागता को, स्थितप्रज्ञता को पुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। वीतरागता में रहे तो अपने घर में आना हो जायेगा।

इससे पूर्व आज प्रातः चूरू संसदीय क्षेत्र के सांसद रामसिंह कस्वां ने आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन किए एवं उनका आशीर्वाद लिया। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद एवं कार्यकारी अध्यक्ष मंगतमल दुगड़ ने सांसद का मोमेण्टों एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया। व्यवस्था समिति की तरफ से 147वें मर्यादा महोत्सव को चिर स्मरणीय बनाने हेतु आचार्यश्री महाश्रमण की एक फोटो समाज के प्रत्येक घर में लगाई जाएगी, जिसकी एक फोटो आज गुरुदेव को भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

विशाल विद्यार्थी सम्मेलन
विषय : जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला
1 फरवरी 2011, मंगलवार
सान्निध्य : आचार्यश्री महाश्रमण
आयोजक : तेरापंथ युवक परिषद्, राजलदेसर
आचार्य श्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव

पूर्व कुलपति डॉ. मंगलप्रज्ञा की साध्वी दीक्षा ६ फरवरी को

तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन की विदुषी एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. समणी ऋतुप्रज्ञा की साध्वी दीक्षा 6 फरवरी को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आचार्य आचार्यश्री महाश्रमण के द्वारा राजलदेसर में होगी। ध्यातव्य है कि डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा नवम्बर मास में ही अपने अत्यन्त सफल चार वर्षीय कुलपति कार्यकाल को सम्पन्न की थी। राजस्थान के एक छोटे से गांव मोमासर में जन्म लेकर उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पूर्व उनमें वैराग्यभाव जागृत हुआ और पारमार्थिक शिक्षण संस्था लाडनूं में प्रवेश लेकर लगभग 6 वर्ष तक अपने वैराग्य को पुष्ट किया और उच्च शिक्षा भी प्राप्त की। गुरुदेव श्री तुलसी से समणी दीक्षा प्राप्तकर देश–विदेश में अहिंसा एवं विश्वशांति के उनके संदेश को प्रसारित किया और साथ ही साथ जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग में अध्यापन कार्य शुरू किया। कालान्तर में महादेवलाल सरावगी अनेकान्त शोधपीठ की निदेशक बनी। इसी विश्वविद्यालय के समकुलपति के बाद पूज्य अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि की अनुपालना करते हुए सन् 2006 से 2010 तक विश्वविद्यालय की कुलपति बनी। कुलपति पद के आपके कार्यकाल को स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है। इस दौरान आपने विश्वविद्यालय का न केवल चहुंमुखी विकास दिया। अपितु इसे एक अन्तराष्ट्रीय केन्द्र भी बनाया। इस दौरान देश–विदेश के सैकड़ों कान्फ्रेंसों एवं गोष्ठियों को सम्बोधित कर प्राच्यविद्या की महत्ता को उजागर किया।

समणश्रेणी के अन्तर्गत अपनी साधना के प्रति आप सदैव जागरूक रही। पद और कार्य कभी आपकी साधना में बाधक नहीं बने। साधना के प्रति समर्पन और आपकी बलवती इच्छा को देखते हुए आपके अनुरोध को स्वीकार करते हुए तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण ने 6 फरवरी को आपको साध्वी दीक्षा देने की योजना की है। इस प्रकार 6 फरवरी को साध्वी के साथ में श्रेणी आरोहण करते हुए आप गुरु दृष्टि की सम्यक् आराधना करेंगी।

विशाल विद्यार्थी सम्मेलन

जीवन रूपान्तरण का प्रयोग जीवन–विज्ञान – आचार्य महाश्रमण

प्रेस विज्ञप्ति :–

राजलदेसर 1 फरवरी । तेरापंथ धर्मसंघ के 147वे मर्यादा महोत्सव पर आचार्य श्री महाश्रमण के पावन प्रवास पर विविध कार्यक्रमों की कड़ी में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वाधान में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के रूप में विशाल विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन दोपहर 1 बजे अध्यात्म समवसरण में किया गया। तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष रजत बैद एवं सुशील घोषल की कर्मठता एवं लगन से कस्बे की 21 संस्थाओं के लगभग दो हजार छात्र–छात्राओं एवं पचास से अधिक शिक्षक–शिक्षिकाओं ने सम्मेलन में भाग लिया। गिरिजाशंकर दुबे ने प्रत्येक विद्यालय में सम्पर्क कर इस सम्मेलन में बच्चों की उपस्थिति को सुनिश्चित किया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि बच्चों के सामने संभावित लम्बा भविष्य है। यदि हम श्रेष्ठ बाल पीढी का निर्माण करते हैं तो उनसे अच्छे युवक और स्वस्थ समाज की संरचना हो सकती है। बच्चों को प्रारम्भ से ही व्यसन मुक्ति का संकल्प करा दिया जावे तो भविष्य में उन्हें नशे की गिरफ्त से बचाया जा सकता है।

आचार्यश्री महाश्रमण के आह्वान पर उपस्थित बच्चों ने जीवन भर व्यसन मुक्त रहने का संकल्प लिया।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने जीवन विज्ञान की बारह इकाईयों का विवेचन करते हुए सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षक–शिक्षिकाओं को स्वस्थ रहने के गुर बतलाए तथा जीवन उपयोगी प्रयोगों का प्रशिक्षण दिया। बच्चों को एकाग्रता, स्मरण शक्ति के विकास एवं तनाव मुक्ति के विभिन्न प्रयोग कराये।

समण सिद्धप्रज्ञ ने बच्चों को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग कराये जीवन विज्ञान एकेडमी के संयोजक सम्पत सुराणा ने विभिन्न आसनों के तरीके बताए।

स्व. भंवरीदेवी बैद की पुण्य स्मृति में खींवकरण नोरतनमल बैद के आर्थिक सौजन्य से जीवन विज्ञान पुस्तिका विद्याथियों एवं शिक्षक–शिक्षिकाओं को वितरित की गई। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा सभी बच्चों के अल्पाहार की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम का संचालन अशोक बैद 'बाडेला' ने किया।

विशाल विद्यार्थी सम्मेलन
विषय : जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला
1 फरवरी 2011, मंगलवार
सान्निध्य : आचार्यश्री महाश्रमण
आयोजक : तेरापंथ युवक परिषद्, राजलदेसर
आचार्य श्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव